NATIONAL SENIOR CERTIFICATE EXAMINATION
NOVEMBER 2019

HINDI FIRST ADDITIONAL LANGUAGE: PAPER I

MARKING GUIDELINES

Time: 2 hours | 80 marks

These marking guidelines are prepared for use by examiners and sub-examiners, all of whom are required to attend a standardisation meeting to ensure that the guidelines are consistently interpreted and applied in the marking of candidates' scripts.

The IEB will not enter into any discussions or correspondence about any marking guidelines. It is acknowledged that there may be different views about some matters of emphasis or detail in the guidelines. It is also recognised that, without the benefit of attendance at a standardisation meeting, there may be different interpretations of the application of the marking guidelines.

IEB Copyright © 2019

भाग क

प्रश्न एक

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर उसपर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर पूरे वाक्यों में हिन्दी में दीजिए ।

प्रदूषण

स्तावना : विज्ञान के इस युग में मानव को जहां कुछ वरदान मिले है, वहां कुछ अभिशाप भी मिले हैं। प्रदूषण एक ऐसा अभिशाप हैं जो विज्ञान की कोख में से जन्मा हैं और जिसे सहने के लिए अधिकांश जनता मजबूर हैं।

प्रदूषण का अर्थ : प्रदूषण का अर्थ है -प्राकृतिक संतुलन में दोष पैदा होना। न शुद्ध वायु मिलना, न शुद्ध जल मिलना, न शुद्ध खाद्य मिलना, न शांत वातावरण मिलना।

प्रदूषण कई प्रकार का होता है! प्रमुख प्रदूषण हैं - वायु-प्रदूषण, जल-प्रदूषण और ध्वनि-प्रदूषण ।

वायु-प्रदूषण : महानगरों में यह प्रदूषण अधिक फैला है। वहां चौबीसों घंटे कल-कारखानों का धुआं, मोटर-वाहनों का काला धुआं इस तरह फैल गया है कि स्वस्थ वायु में सांस लेना दूभर हो गया है। मुंबई की महिलाएं धोए हुए वस्त्र छत से उतारने जाती है तो उन पर काले-काले कण जमे हुए पाती है। ये कण सांस के साथ मनुष्य के फेफड़ों में चले जाते हैं और असाध्य रोगों को जन्म देते हैं! यह समस्या वहां अधिक होती हैं जहां सघन आबादी होती है, वृक्षों का अभाव होता है और वातावरण तंग होता है।

जल-प्रदूषण : कल-कारखानों का दूषित जल नदी-नालों में मिलकर भयंकर जल-प्रदूषण पैदा करता है। बाढ़ के समय तो कारखानों का दुर्गंधित जल सब नाली-नालों में घुल मिल जाता है। इससे अनेक बीमारियां पैदा होती है।

ध्वनि-प्रदूषण : मनुष्य को रहने के लिए शांत वातावरण चाहिए। परन्तु आजकल कल-कारखानों का शोर, यातायात का शोर, मोटर-गाड़ियों की चिल्ल-पों, लाउड स्पीकरों की कर्णभेदक ध्वनि ने बहरेपन और तनाव को जन्म दिया है।

प्रदूषणों के दुष्परिणाम: उपर्युक्त प्रदूषणों के कारण मानव के स्वस्थ जीवन को खतरा पैदा हो गया है। खुली हवा में लम्बी सांस लेने तक को तरस गया है आदमी। गंदे जल के कारण कई बीमारियां फसलों में चली जाती हैं जो मनुष्य के शरीर में पहुंचकर घातक बीमारियां पैदा करती हैं। भोपाल गैस कारखाने से रिसी गैस के कारण हजारों लोग मर गए, कितने ही अपंग हो गए। पर्यावरण-प्रदूषण के कारण न समय पर वर्षा आती है, न सर्दी-गर्मी का चक्र ठीक चलता है। सुखा, बाढ़, ओला आदि प्राकृतिक प्रकोपों का कारण भी प्रदूषण है।

प्रदूषण के कारण : प्रदूषण को बढ़ाने में कल-कारखाने, वैज्ञानिक साधनों का अधिक उपयोग, फ्रिज, कूलर, वातानुकूलन, ऊर्जा संयंत्र आदि दोषी हैं। प्राकृतिक संतुलन का बिगड़ना भी मुख्य कारण है। वृक्षों को अंधा-धुंध काटने से मौसम का चक्र बिगड़ा है। घनी आबादी वाले क्षेत्रों में हरियाली न होने से भी प्रदूषण बढ़ा है।

सुधार के उपाय : विभिन्न प्रकार के प्रदूषण से बचने के लिए चाहिए कि अधिक से अधिक पेड़ लगाए जाएं, हरियाली की मात्रा अधिक हो। सड़कों के किनारे घने वृक्ष हों। आबादी वाले क्षेत्र खुले हों, हवादार हों, हरियाली से ओतप्रोत हों। कल-कारखानों को आबादी से दूर रखना चाहिए और उनसे निकले प्रदूषित मल को नष्ट करने के उपाय सोचना चाहिए।

[Source: Web Duniya]

१.१ प्रदूशण का अर्थ संक्षेप में लिखिए ?

प्रदूषण का अर्थ है -प्राकृतिक संतुलन में दोष पैदा होना। न शुद्ध वायु मिलना, न शुद्ध जल मिलना, न शुद्ध खाद्य मिलना, न शांत वातावरण मिलना।

१.२ किहीं एक प्रकार का प्रदूशण पर चर्चा कीजिए ?

जल-प्रदूषण ध्वनि-प्रदूषण :

वायु-प्रदूषण : महानगरों में यह प्रदूषण अधिक फैला है। वहां चौबीसों घंटे कल-कारखानों का धुआं, मोटर-वाहनों का काला धुआं इस तरह फैल गया है कि स्वस्थ वायु में सांस लेना दूभर हो गया है। मुंबई की महिलाएं धोए हुए वस्त्र छत से उतारने जाती है तो उन पर काले-काले कण जमे हुए पाती है। ये कण सांस के साथ मनुष्य के फेफड़ों में चले जाते हैं और असाध्य रोगों को जन्म देते हैं! यह समस्या वहां अधिक होती हैं जहां सघन आबादी होती है, वृक्षों का अभाव होता है और वातावरण तंग होता है।

१.३ इन वाक्य को अपने शब्दों में समझाइए ः

१.३.१ प्राकृतिक संतुलन में दोष पैदा होना ।

इससे प्रकृति में एक असंतुलन पैदा हो जाता है। पेड़ कट जाते हैं। जानवरों का शिकार किया जाता है। नदियाँ और समुद्र प्रदूषित हैं। इसका मतलब प्राकृतिक संतुलन है।

१.३.२ अंधा धुंध को काटने

बिना संयम के। बिना सोचे समझे हटाने के लिए। बिना नियंत्रण के पागल हो जाना

१.३.३ हरियाली की मात्रा अधिक हो ।

बहुत हरियाली होनी चाहिए। यह परिदृश्य पर हावी होना चाहिए

१.३.४ विज्ञान के इस युग

इस युग में विज्ञान ने कई वरदानों के साथ-साथ कई कठिनाइयों को भी जन्म दिया है। क्षति को ठीक करने के लिए विज्ञान का उपयोग किया जा सकता है

१.४ सुधार के उपाय ः" विभिन्न प्रकार के प्रदूषण से बचने के लिए" यह कैसे हो सकता है अपने शब्दों में समझाइए ।

विभिन्न प्रकार के प्रदूषण से बचने के लिए चाहिए कि अधिक से अधिक पेड़ लगाए जाएं, हरियाली की मात्रा अधिक हो। सड़कों के किनारे घने वृक्ष हों। आबादी वाले क्षेत्र खुले हों, हवादार हों, हरियाली से ओतप्रोत हों। कल-कारखानों को आबादी से दूर रखना चाहिए और उनसे निकले प्रदूषित मल को नष्ट करने के उपाय सोचना चाहिए

१.५ समानार्थी शब्द लिखिए ।

१.५.१ मानव **आदमी**
१.५.२ जनता **प्रजा**
१.५.३ वायु **पवन**
१.५.४ जल **पानी**

१.६ विलोल शब्द लिखिए ।

१.६.१ शांत **अशांत**
१.६.२ जन्म **मरण**
१.६.३ शुध्द **गंद**
१.६.४ नष्ट **मरम्मत**

IEB Copyright © 2019

भाग ख

प्रश्न दो

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर उसका संक्षिप्त विवरण कीजिए

जो हुआ अच्छा हुआ

अक्सर लोगों को कहते सुना है कि अपना मान-सम्मान, अपना यश-अपयश, अपना सुख-दुख और आनि लाभ आदि सभी कुछ मनुष्य के अपने हाथों ही रहा करता है। एक दृष्टि से यह मान्यता का ो सत्य एंव उचित भी कहा जा सकता है। वह इस प्रकार कि मनुष्य अच्छे-बुरे जैसे भी कर्म किया करता है, उसी प्रकार से उसे हानि-लाभ तो उठाने ही पड़ते हैं। उन्हें जान-सुनकर विश्व का व्यवहार भी उसके प्रति उसके लिए कर्मों जैसा ही हो जाया करता है, अर्थात अच्छे कर्म वाला सुयश और मान-सम्मान का भागी बन जाया करता है। लेकिन शीर्षक मुक्ति में कविवर तुलसीदास ने इस प्रचलित धारणा के विपरीत मत प्रकट करते हुए कहा है कि-

'हानि-लाभ-जीवन-मरण, यश-अपयश विधि हाथ।' अर्थात जन्म से लेकर मृत्यु तक मनुष्य आनि-लाभ, यश-अपयश जो कुछ भी अर्जित कर पाता है। उसमें उसका अपना वश या हाथ कतई नहीं रहा करता है। विधाता की जब जैसी इच्छा हुआ करती है, तब उसे उसी प्रकार की लाभ-हानि तो उठानी ही पड़ती है। मान-अपमान भी सहना पड़ता है। जीवन और मृत्यु तो एकदम असंदिज्ध रूप में मनुष्य के अपने वश में न रहकर विधाता के हाथ में रहती ही है।

जब हम गंभीरता से प्रचिलित धारणा और कतव की मान्प्यता पर विचार करते हैं, लोक के अनुभवों के आधार पर सत्य को तोलकर या परखकर देखते हैं, तो कवि की मान्यता प्राय: सत्य एंव अधिक युक्तिसंगत प्रतीत होती है। एक व्यक्ति रात-दिन यह सोचकर परिश्रम करता रहता है कि उसका सुफल पाकर जीवन में सुख भेग और सफलता पा सकेगा, पर होता इसके विपरीत है। विधाता उसके किए-कराए पर पानी फेरकर सारी कल्पनाएं भूमिसात कर देता है। एक उदाहरण से इस बात की वास्तविकता सहज ही समझी जा सकती है। एक किसान दिन-रात मेहनत करके फसल उगाता है। लहलहाती फसलों के रूप में अपने कर्म और परिश्रम का सुफल निहारकर मन ही मन फला नहीं समाता। किंतु अचानक रात में अतिवृष्टि होकर या बाढ़ आकर उस सबको तहस-नहस करके रख देती है। अब इसे आप क्या कहना चाहेंगे? हानि-लाभ सभी कुछ वास्तव में विधाता के ही हाथ में है। इसके सिवा और कह भी क्या सकते हैं।

इसी प्रकार मनुष्य अच्छे-बुरे तरह-तरह के कर्म करता, कई प्रकार के पापड़ बेलकर धन-संपति अर्जित एंव संचित करता रहता है।। यह सोच-विचारकर मन ही मन बड़ा प्रसन्न भी रहता करता है कि उसे भविष्य के लिए किसी प्रकार की चिंता नहीं पड़ती। तभी अचानक कोई महामारी, कोई दुर्घटना होकर उसके प्राणों को हर लेती है और उसके भावी सुखों की कल्पना का आधार सारी धन संपति उसे सुख तो क्या देना उसके प्राणों की रक्षा तक नहीं कर पाती। इसमें भी तो विधाता की इच्छा ही मानी जाती है।

[Source: E Virtual Guru]

भाग ग

प्रश्न ३

निम्न विज्ञापन को ध्यानपूर्वक पढ़कर प्रश्न का उत्तर दीजिए I

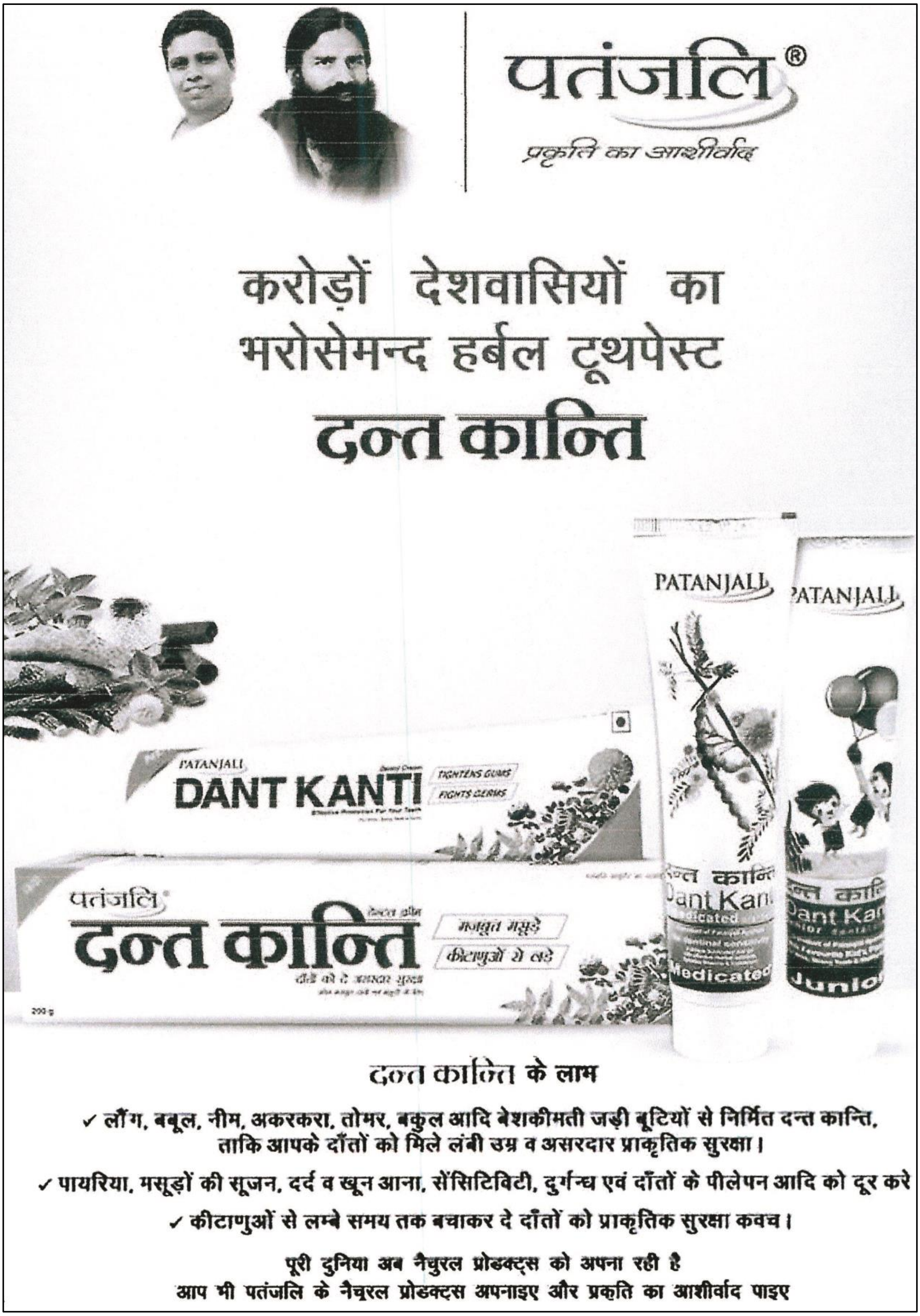

३.१ इस विज्ञापन में क्या विज्ञापित है ?

टूथपेस्ट

३.२ निम्नलिखित बक्य को अपने शब्दों में लिखिए ।

३.२.१ प्रकृति का आशीर्वाद ।

प्रकृति का आशीर्वाद। परमात्मा से ही।

३.२.२ कीटाणुओं से लंबे समय तक बचाकर ।

यह हमें लंबे समय तक कीटाणुओं से बचाता है। स्वस्थ दांतों में

३.३ करोड़ो देशवासियों का भरोसेमन्द को क्यों लिखा गया है ?

यह दिखाना है कि लाखों इस उत्पाद पर भरोसा करते हैं। लोगों को एक आश्वासन देता है कि यह कोशिश की गई और परीक्षण किया गया उत्पाद है। लाखों द्वारा समर्थित

३.४ विज्ञापन के अनुसार पूरी दुनिया क्या कर रहे है

पूरी दुनिया प्राकृतिक उत्पादों की ओर रुख कर रही है। लोग स्वस्थ रहना चाहते हैं

३.५ इस विज्ञापन में दन्त कान्ति के लाभ क्या है ?

दन्त कान्ति के लाभ

✓ लौंग, बबूल, नीम, अकरकरा, तोमर, बकुल आदि बेशकीमती जड़ी बूटियों से निर्मित दन्त कान्ति, ताकि आपके दाँतों को मिले लंबी उम्र व असरदार प्राकृतिक सुरक्षा।

✓ पायरिया, मसूड़ों की सूजन, दर्द व खून आना, सेंसिटिविटी, दुर्गन्ध एवं दाँतों के पीलेपन आदि को दूर करे

✓ कीटाणुओं से लम्बे समय तक बचाकर दे दाँतों को प्राकृतिक सुरक्षा कवच।

पूरी दुनिया अब नेचुरल प्रोडक्ट्स को अपना रही है
आप भी पतंजलि के नेचुरल प्रोडक्टस अपनाइए और प्रकृति का आशीर्वाद पाइए

३.६ पतंजलि क्यों प्रसिध्द है ?

योग के गुरु के रूप में माना जाता है। योग की संहिताबद्ध और स्थापित प्रणाली

प्रश्न ४

निम्नलिखित चित्र को ध्यान पूर्वक देखकर प्रश्नों का उत्तर दीजिए ।

[Source: <http://cartooncall.blogspot.com>]

४.१ कार्टून का चित्र वर्णन कीजिए ?

एक अधिक वजन और सुस्त व्यक्ति एक कुर्सी पर बैठा। बस शिकायत है

४.२ इस कार्टून को सही शीर्षक दीजिए ? कारण बताइए ।

आलस्य। चित्रों में एक आलसी और नींद वाले व्यक्ति को दिखाया गया है

४.३ यह व्यक्ति क्या और क्यों बोल रहे हैं ?

वह कह रहा है कि मैं योग नहीं कर सकता। मेरे शरीर में भावनात्मक मुद्दे हैं। दर्द और कठिनाइयों के बहुत सारे।

४.४ यह कार्टून किसने बनाया ?

बी बी सी हिन्दी

४.५ कार्टून का क्या सन्देश है ?

कि हमें आलसी नहीं होना चाहिए। वापस बैठने और शिकायत करने से मदद नहीं मिलेगी। हम अपनी मानसिक और शारीरिक दृढ़ता खो देंगे।

Total: 80 marks

IEB Copyright © 2019